अनुक्रम

अवधनारायण मुद्‌गल की रचनाएँ 7

कहानियाँ/लघुकथाएँ

प्रस्तावना : मेरी कथायात्रा 25

कहानियाँ

कबंध 29
चक्रवात 33
दस्तकें 56
बेतुका आदमी 61
…और कुत्ता मान गया 70
पीर, बावर्ची, भिश्ती, खर 77
टूटी हुई बैसाखियाँ 83
गंधों के साये 87
रिटायर अफसर 93
शताब्दियों के बीच 100
संपाती 106
आवाज़ों का म्यूज़ियम 111

लघुकथाएँ

पीले पत्ते : मुरझाए गुलाबों की गंध 117
कुतुब की छत से 118
सिसीपस 119
प्रमथ्यु 120
सावित्री नंबर तीन 121
जंगल 122

कविताएँ/ग़ज़लें
पहला खंड : नये सिरे से नई ज़िंदगी

मेरा छंद : मेरा गीत	125
सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्	126
शायद नया वर्ष आ गया है	128
इनसे मिलिए	129
सन्नाटे का प्रेत	132
भक्ति और भगवान	134
जीवन का बिरवा	135
एक तर्क-प्रक्रिया	136
यही तो दुनिया है	138
जीवन का कारवाँ	139
मैं शून्य हूँ	140
दीप जलाओ	142
तूफ़ान	143
भय नहीं है	144
मुझे पड़ा रहने दो	145
मामेकं शरणं व्रज	146
शायद तुम रो रहे थे	148
भाव तुम्हारे	150
विवशता	151
काग़ज़ की नाव	152
चेतना का दीपक	154
अंधे को कुछ मिल जाए बाबा	156
मिल गया, मिल गया	158
ज्ञानोदय	159
अहम्	161
रोशनी का देश	164
जुए का एक अड्डा	165
मरघट की आवाज़	167
एक शुभचिंतक	171
फ़ुर्सत नहीं—एक समस्या	172
अतीत	174
पहली अप्रैल	178
असूर्यम्पश्या	180

हाट 184
एक अनुभूति : एक वितृष्णा 186
असमय के बादल 189
भैंसा 191
पीड़ा का वृक्ष 194
नये सिरे से नई ज़िंदगी 197

दूसरा खंड : साँझ, रात और सुबह की धूप

प्राक्कथन 199
मिथकीय प्रतीक
महाभारत का जन्म 201
प्रमथ्यु : एक विकेंद्रित आग 205
सिंधु, मैं और शक्ति-संतुलन 208
नाग यज्ञ और मैं 210
कर्ण : एक नीति परिदृश्य 212
वैयक्तिक
वक़्त 215
एक एहसास ठंडा-सा 220
हमें क्या पता था... 222
खोया हुआ एहसास 227
कभी-कभी ऐसा होता है... 231
टुकड़े-टुकड़े यादें 235
एक खिलौना घर में 241
मौसम 244
अच्छा लगता है 246
अंधों की बस्ती और मैं 248
निष्कर्ष : मेरी अहं यात्रा 250
मुद्राएँ 251
हम आदमी नहीं हैं 253
न जाने क्यों ? 258
जहाँ-जहाँ अँधेरा है 260
नव वर्ष 261
एक ख़त गुमशुदा बेटी के नाम 263
विविधा
इतिहास की भूल-भुलैया 266

हम : आकृतियों के शीतोष्ण टकराव 269
लगता है 270
रूप, यौवन और प्रेम 271
आशा और विश्वास 272
मछुओं की बस्ती : तीन दृश्य 273
जन्मदिन 275
रात : समुद्र में डूबी हुई रोशनियाँ और मैं 277
जहाँ मैं हूँ 278
खंडित व्यक्तित्व का समर्पण 279
दफ़्तर, कुर्सी और मैं 280
बीता हुआ शोर 281
जब भी मैं 282
टूटती आवाज़ें 283
धुएँ का शहर 285
ट्रैफ़िक लाइट, लैंपपोस्ट और मैं 288
चार नव्य गीत
साँझ, रात और सुबह की धूप 290
ग़ज़लें
इस हाट में बिकती नहीं 293
कहते हैं लोग 294
क़स्बे हों या शहर 295
उल्लुओं की भीड़ 296
जाने किसकी मेहरबानी 297
आदमी से भी गए-बीते 298
अब वही शाम, वही शहर है 299
किसी गुरु या औलिया की बात 300
यूँ हज़ारों मुखौटे लगाते हैं लोग 301
हम फटेहाल इसी बस्ती में ही बसते हैं 302
आइए आप ही का स्वागत है 303
गुज़रे वक़्तों की याद आई है 304